हनुमान् बाहुक् (तुलसीदास कृतं)

हनुमान् बाहुक् (तुलसीदास कृतं)

– छप्पय –

सिंधु-तरन, सिय-सोच-हरन, रबि-बालबरन-तनु |
भुज बिसाल, मूरति कराल कालहुको काल जनु ||
गहन-दहन-निरदहन-लंक निसंक, बंक-भुव |
जातुधान-बलवान-मान-मद-दवन पवनसुव ||
कह तुलसिदास सेवत सुलभ, सेवक हित संतत निकट |
गुनगनत, नमत, सुमिरत, जपत, समन सकल-संकट-बिकट || 1 ||

स्वर्न-सैल-संकास कोटि-रबि-तरुन-तेज-घन |
उर बिसाल, भुजदंड चंड नख बज्र बज्रतन ||
पिंग नयन, भृकुटी कराल रसना दसनानन |
कपिस केस, करकस लंगूर, खल-दल बल भानन ||
कह तुलसिदास बस जासु उर मारुतसुत मूरति बिकट |
संताप पाप तेहि पुरुष पहिँ सपनेहुँ नहिँ आवत निकट || 2 ||

– झूलना –

पंचमुख-छमुख-भृगुमुख्य भट-असुर-सुर,
सर्व-सरि-समर समरत्थ सूरो |
बांकुरो बीर बिरुदैत बिरुदावली,
बेद बंदी बदत पैजपूरो ||
जासु गुननाथ रघुनाथ कह, जासु बल,
बिपुल-जल-भरित जग-जलधि झूरो |
दुवन-दल-दमनको कौन तुलसीस है
पवनको पूत रजपूत रूरो || 3 ||

– घनाक्षरी –

भानुसोँ पढन हनुमान गये भानु मन –

अनुमानि सिसुकेलि कियो फेरफार सो |
पाछिले पगनि गम गगन मगन-मन,
क्रमको न भ्रम, कपि बालक-बिहार सो ||
कौतुक बिलोकि लोकपाल हरि हर बिधि,
लोचननि चकाचौंधी चित्तनि खभार सो |
बल कैधौं बीररस, धीरज कै, साहस कै,
तुलसी सरीर धरे सबनिको सार सो || 4 ||

भारतमेँ पारथके रथकेतु कपिराज,
गाज्यो सुनि कुरुराज दल हलबल भो |
कह्यो द्रोन भीषम समीरसुत महाबीर,
बीर-रस-बारि-निधि जाको बल जल भो ||
बानर सुभाय बालकेलि भूमि भानु लागि,
फलँग फलाँगहूँतें घाटि नभतल भो |
नायि-नायि माथ जोरि-जोरि हाथ जोधा जोहैँ,
हनुमान देखे जगजीवनको फल भो || 5 ||

गोपद पयोधि करि होलिका ज्यौँ लायी लंक,
निपट निसंक परपुर गलबल भो |
द्रोन-सो पहार लियो ख्याल ही उखारि कर,
कंदुक-ज्यौँ कपिखेल बेल कैसो फल भो ||
संकटसमाज असमंजस भो रामराज,
काज जुग-पूगनिको करतल पल भो |
साहसी समत्थ तुलसीको नाह जाकी बाँह,
लोकपाल पालनको फिर थिर थल भो || 6 ||

कमठकी पीठि जाके गोडनिकी गाडैँ मानो
नापके भाजन भरि जलनिधि-जल भो |
जातुधान-दावन परावनको दुर्ग भयो,
महामीनबास तिमि तोमनिको थल भो ||
कुंभकर्न-रावन-पयोदनाद-ईंधनको
तुलसी प्रताप जाको प्रबल अनल भो |
भीषम कहत मेरे अनुमान हनुमान –

सारिखो त्रिकाल न त्रिलोक महाबल भो || 7 ||

दूत रामरायको, सपूत पूत पौनको, तू
अंजनीको नंदन प्रताप भूरि भानु सो |
सीय-सोच-समन, दुरित-दोष-दमन,
सरन आये अवन, लखनप्रिय प्रान सो ||
दसमुख दुसह दरिद्र दरिबेको भयो,
प्रकट तिलोक ओक तुलसी निधान सो |
ज्ञान-गुनवान बलवान सेवा सावधान,
साहेब सुजान उर आनु हनुमान सो || 8 ||

दवन-दुवन-दल भुवन-बिदित बल,
बेद जस गावत बिबुध बंदीछोर को |
पाप-ताप-तिमिर तुहिन-विघटन-पटु,
सेवक-सरोरुह सुखद भानु भोरको ||
लोक-परलोकतेँ बिसोक सपने न सोक,
तुलसीके हिये है भरोसो एक ओरको |
रामको दुलारो दास बामदेवको निवास,
नाम कलि-कामतरु केसरी-किसोरको || 9 ||

महाबल-सीम, महाभीम, महाबानयित,
महाबीर बिदित बरायो रघुबीरको |
कुलिस-कठोरतनु जोरपरै रोर रन,
करुना-कलित मन धारमिक धीरको ||
दुर्जनको कालसो कराल पाल सज्जनको,
सुमिरे हरनहार तुलसीकी पीरको |
सीय-सुखदायक दुलारो रघुनायकको,
सेवक सहायक है साहसी समीरको || 10 ||

रचिबेको बिधि जैसे, पालिबेको हरि, हर
मीच मारिबेको, ज्याइबेको सुधापान भो |
धरिबेको धरनि, तरनि तम दलिबेको,
सोखिबे कृसानु, पोषिबेको हिम-भानु भो ||

खल-दुख-दोषिबेको, जन-परितोषिबेको,
माँगिबो मलीनताको मोदक सुदान भो |
आरतकी आरति निवारिबेको तिहुँ पुर,
तुलसीको साहेब हठीलो हनुमान भो || 11 ||

सेवक स्योकाई जानि जानकीस मानै कानि,
सानुकूल सूलपानि नवै नाथ नाँकको |
देवी देव दानव दयावने ह्वै जोरैं हाथ,
बापुरे बराक कहा और राजा राँकको ||
जागत सोवत बैठे बागत बिनोद मोद,
ताकै जो अनर्थ सो समर्थ एक आँकको |
सब दिन रूरो परै पुरो जहाँ-तहाँ ताहि,
जाके है भरोसो हिये हनुमान हाँकको || 12 ||

सानुग सगौरि सानुकूल सूलपानि ताहि,
लोकपाल सकल लखन राम जानकी |
लोक परलोकको बिसोक सो तिलोक ताहि,
तुलसी तमाइ कहा काहू बीर आनकी ||
केसरीकिसोर बंदीछोरके नेवाजे सब,
कीरति बिमल कपि करुनानिधानकी |
बालक-ज्यों पालहैं कृपालु मुनि सिद्ध ताको,
जाके हिये हुलसति हाँक हनुमानकी || 13 ||

करुना निधान, बलबुद्धिके निधान, मोद-
महिमानिधान, गुन-ज्ञानके निधान हौ |
बामदेव-रूप, भूप रामके सनेही, नाम
लेत-देत अर्थ धर्म काम निरबान हौ ||
आपने प्रभाव, सीतानाथके सुभाव सील,
लोक-बेद-बिधिके बिदुष हनुमान हौ |
मनकी, बचनकी, करमकी तिहुँ प्रकार,
तुलसी तिहारो तुम साहेब सुजान हौ || 14 ||

मनको अगम, तन सुगम किये कपीस,

काज महाराजके समाज साज साजे हैं |
देव-बंदीछोर रनरोर केसरीकिसोर,
जुग-जुग जग तेरे बिरद बिरजे हैं |
बीर बरजोर, घटि जोर तुलसीकी ओर
सुनि सकुचाने साधु, खलगन गाजे हैं |
बिगरी सँवार अंजनीकुमार किजे मोहिं,
जैसे होत आये हनुमानके निवाजे हैं || 15 ||

– सवैया –

जानसिरोमनि हौ हनुमान सदा जनके मन बास तिहारो |
ढारो बिगारो मैं काको कहा केहि कारन खीझत हौं तो तिहारो ||
साहेब सेवक नाते ते हातो कियो सो तहाँ तुलसीको न चारो |
दोष सुनाये तें आगेहुँको होशियार ह्वै हों मन तौ हिय हारो || 16 ||

तेरे थपे उथपै न महेस, थपै थिरको कपि जे घर घाले |
तेरे निवाजे गरीबनिवाज बिराजत बैरिनके उर साले |
संकट सोच सबै तुलसी लिये नाम फटै मकरीके-से जाले |
बूढ भये, बलि, मेरिहि बार, कि हारि परे बहुतै नत पाले || 17 ||

सिंधु तरे, बडे बीर दले खल, जारे हैं लंकसे बंक मवा से |
तैं रन-केहरि केहरिके बिदले अरि-कुंजर छैल छवा से ||
तोसों समत्थ सुसाहेब सेइ सहै तुलसी दुख दोष दवासे |
बानर बाज बढे खल-खेचर, लीजत क्यों न लपेटि लवा-से || 18 ||

अच्छ-बिमर्दन कानन-भानि दसानन आनन भा न निहारो |
बारिदनाद अकंपन कुंभकरन्न-से कुंजर केहरि-बारो ||
राम-प्रताप-हुतासन, कच्छ, बिपच्छ, समीर समीरदुलारो |
पापतैं, सापतैं, ताप तिहुँतैं सदा तुलसी कहँ सो रखवारो || 19 ||

– घनाक्षरी –

जानत जहान हनुमानको निवाज्यौ जन,
मन अनुमानि, बलि, बोल न बिसारिये |

सेवा-जोग तुलसी कबहुँ कहा चूक परी,
साहेब सुभाव कपि साहिबी सँभारिये ||
अपराधी जानि कीजै सासति सहस भांति,
मोदक मरै जो, ताहि माहुर न मारिये |
साहसी समीरके दुलारे रघुबीरजूके,
बाँह पीर महाबीर बेगि ही निवारिये || 20 ||

बालक बिलोकि, बलि, बारेतें आपनो कियो,
दीनबंधु दया कीन्हीं निरूपाधि न्यारिये |
रावरो भरोसो तुलसीके, रावरोई बल,
आस रावरीयै, दास रावरो बिचारिये ||
बडो बिकराल कलि, काको न बिहाल कियो,
माथे पगु बलीको, निहारि सो निवारिये |
केसरीकिसोर, रनरोर, बरजोर बीर,
बाँहुपीर राहुमातु ज्यौं पछारि मारिये || 21 ||

उथपे थपनथिर थपे उथपनहार,
केसरीकुमार बल आपनो सँभारिये |
रामके गुलामनिको कामतरु रामदूत,
मोसे दीन दुबरेको तकिया तिहारिये ||
साहेब समर्थ तोसों तुलसीके माथे पर,
सोऊ अपराध बिनु बीर, बाँधि मारिये |
पोखरी बिसाल बाँहु, बलि बारिचर पीर,
मकरी ज्यौं पकरिकै बदन बिदारिये || 22 ||

रामको सनेह, राम साहस लखन सिय,
रामकी भगति, सोच संकट निवारिये |
मुद-मरकट रोग-बारिनिधि हेरि हारे,
जीव-जामवंतको भरोसो तेरो भारिये ||
कूदिये कृपाल तुलसी सुप्रेम-पब्बयतें,
सुथल सुबेल भालु बैठिकै बिचारिये |
महाबीर बाँकुरे बराकी बाँहपीर क्यों न,
लंकिनी ज्यों लातघात ही मरोरि मारिये || 23 ||

लोक-परलोकहुँ तिलोक न बिलोकियत,
तोसे समरथ चप चारिहुँ निहारिये |
कर्म, काल, लोकपाल, अग-जग जीवजाल,
नाथ हाथ सब निज महिमा बिचारिये ||
खास दास रावरो, निवास तेरो तासु उर,
तुलसी सो देव दुखी देखियत भारिये |
बात तरुमूल बाँहुसूल कपिकच्छु-बेलि,
उपजी सकेलि कपिकेलि ही उखारिये || 24 ||

करम-कराल-कंस भूमिपालके भरोसे,
बकी बकभगिनी काहूतें कहा डरैगी |
बडी बिकराल बालघातिनी न जात कहि,
बाँहुबल बालक छबीले छोटे छरैगी ||
आई है बनाइ बेष आप ही बिचारि देख,
पाप जाय सबको गुनीके पाले परैगी |
पूतना पिसाचिनी ज्यौं कपिकान्ह तुलसीकी,
बाँहपीर महाबीर, तेरे मारे मरैगी || 25 ||

भालकी कि कालकी कि रोषकी त्रिदोषकी है,
बेदन बिषम पाप-ताप छलछाँहकी |
करमन कूटकी कि जंत्रमंत्र बूटकी,
पराहि जाहि पापिनी मलीन मनमाँहकी ||
पैहहि सजाय नत कहत बजाय तोहि,
बावरी न होहि बानि जानि कपिनाँहकी |
आन हनुमानकी दोहाई बलवानकी,
सपथ महाबीरकी जो रहै पीर बाँहकी || 26 ||

सिंहिका संहारि बल, सुरसा सुधारि छल,
लंकिनी पछारि मारि बाटिका उजारी है |
लंक परजारि मकरी बिदारि बारबार,
जातुधान धारि धूरिधानी करि डारी है ||
तोरि जमकातरि मदोदरि कढोरि आनी,
रावनकी रानी मेघनाद महँतारी है |

भीर बाँहपीरकी निपट राखी महाबीर,
कौनके सकोच तुलसीके सोच भारी है || 27 ||

तेरो बालकेलि बीर सुनि सहमत धीर,
भूलत सरीरसुधि सक्र-रबि-राहुकी |
तेरी बाँह बसत बिसोक लोकपाल सब,
तेरो नाम लेत रहै आरति न काहुकी ||
साम दान भेद बिधि बेदहू लबेद सिधि,
हाथ कपिनाथहीके चोटी चोर साहुकी |
आलस अनख परिहासकै सिखावन है,
एते दिन रही पीर तुलसीके बाहुकी || 28 ||

टूकनिको घर-घर डोलत कँगाल बोलि,
बाल ज्यों कृपाल नतपाल पालि पोसो है |
कीन्ही है संभार सार अंजनीकुमार बीर,
आपनो बिसारिहैं न मेरेहू भरोसो है ||
इतनो परेखो सब भांति समरथ आजु,
कपिराज साँची कहौं को तिलोक तोसो है |
सासति सहत दास कीजे पेखि परिहास,
चीरीको मरन खेल बालकनिको सो है || 29 ||

आपने ही पापतें त्रितापतें कि सापतें,
बढी है बाँहबेदन कही न सहि जाति है |
औषध अनेक जंत्र-मंत्र-टोटकादि किये,
बादि भये देवता मनाये अधिकाति है ||
करतार, भरतार, हरतार, कर्म, काल,
को है जगजाल जो न मानत इताती है |
चेरो तेरो तुलसी तू मेरो कह्यो रामदूत,
ढील तेरी बीर मोहि पीरतें पिराति है || 30 ||

दूत रामरायको, सपूत पूत बायको,
समत्थ हाथ पायको सहाय असहायको |
बाँकी बिरदावली बिदित बेद गाइयत,

रावन सो भट भयो मुठिकाके घायको ||
एते बडे साहेब समर्थको निवाजो आज,
सीदत सुसेवक बचन मन कायको |
थोरी बाँहपीरकी बडी गलानी तुलसीको,
कौन पाप कोप, लोप प्रगट प्रभायको || 31 ||

देवी देव दनुज मनुज मुनि सिद्ध नाग,
छोटे बडे जीव जेते चेतन अचेत हैं |
पूतना पिसाची जातुधानी जातुधान बाम,
रामदूतकी रजाइ माथे मानि लेत हैं ||
घोर जंत्र मंत्र कूट कपट कुरोग जोग,
हनूमान आन सुनि छाडत निकेत हैं |
क्रोध कीजे कर्मको प्रबोध कीजे तुलसीको,
सोध कीजे तिनको जो दोष दुख देत हैं || 32 ||

तेरे बल बानर जिताये रन रावनसों,
तेरे घाले जातुधान भये घर-घरके |
तेरे बल रामराज किये सब सुरकाज,
सकल समाज साज सजे रघुबरके ||
तेरो गुनगान सुनि गीरबान पुलकत,
सजल बिलोचन बिरंचि हरि हरके |
तुलसीके माथेपर हाथ फेरो कीसनाथ,
देखिये न दास दुखी तोसे कनिगरके || 33 ||

पालो तेरे टूकको परेहू चूक मूकिये न,
कूर कौडी दूको हौं आपनी ओर हेरिये |
भोरानाथ भोरेही सरोष होत थोरे दोष,
पोषि तोषि थापि आपनो न अवडेरिये ||
अंबु तू हौँ अंबुचर, अंब तू हौँ डिंभ, सो न,
बूझिये बिलंब अवलंब मेरे तेरिये |
बालक बिकाल जानि पाहि प्रेम पहिचानि,
तुलसीकी बाँह पर लामीलूम फेरिये || 34 ||

घेरि लियो रोगनि कुजोगनि कुलोगनि ज्यौं,
बासर जलद घन घटा धुकि धाई है |
बरसत बारि पीर जारिये जवासे जस,
रोष बिनु दोष, धूम-मूल मलिनाई है ||
करुनानिधान हनुमान महाबलवान,
हेरि हँसि हाँकि फूँकि फौजें तैं उडायी है |
खाये हुतो तुलसी कुरोग राढ राकसनि,
केसरीकिसोर राखे बीर बरिआई है || 34 ||

– सवैया –

रामगुलाम तुही हनुमान
गोसाँयि सुसाँयि सदा अनुकूलो |
पाल्यो हौं बाल ज्यों आखर दू
पितु मातु सों मंगल मोद समूलो ||
बाँहकी बेदन बाँहपगार
पुकारत आरत आनंद भूलो |
श्रीरघुबीर निवारिये पीर
रहौं दरबार परो लटि लूलो || 36 ||

– घनाक्षरी –

कालकी करलता करम कठिनाई कीधौं,
पापके प्रभावकी सुभाय बाय बावरे |
बेदन कुभांति सो सहि न जाति राति दिन,
सोई बाँह गही जो गही समीरडावरे ||
लायो तरु तुलसी तिहारो सो निहारि बारि,
सींचिये मलीन भो तयो है तिहुँ तावरे |
भूतनिकी आपनी परायेकी कृपानिधान,
जानियत सबहीकी रीति राम रावरे || 37 ||

पायँपीर पेटपीर बाँहपीर मुँहपीर,
जरजर सकल सरीर पीरमई है |

देव भूत पितर करम खल काल ग्रह,
मोहिपर दवरि दमानक सी दई है ||
हौं तो बिन मोलके बिकानो बलि बारेही तें,
ओट रामनामकी ललाट लिखि लई है |
कुंभजके किंकर बिकल बूडे गोखुरनि,
हाय रामराय ऐसी हाल कहूँ भई है || 38 ||

बाहुक-सुबाहु नीच लीचर-मरीच मिलि,
मुँहपीर-केतुजा कुरोग जातुधान है |
राम नाम जपजाग कियो चहौं सानुराग,
काल कैसे दूत भूत कहा मेरे मान है ||
सुमिरे सहाय रामलखन आखर दोऊ,
जिनके समूह साके जागत जहान है |
तुलसी सँभारि ताडका-सँहारि भारी भट,
बेधे बरगदसे बनाइ बानवान है || 39 ||

बालपने सूधे मन राम सनमुख भयो,
रामनाम लेत माँगि खात टूकटाक हौं |
परयो लोकरीतिमें पुनीत प्रीति रामराय,
मोहबस बैठो तोरि तरकितराक हौं |
खोटे-खोटे आचरन आचरत अपनायो,
अंजनीकुमार सोध्यो रामपानि पाक हौं ||
तुलसी गोसायीं भयो भोंडे दिन भूलि गयो,
ताको फल पावत निदान परिपाक हौं || 40 ||

असन-बसन-हीन बिषम-बिषाद-लीन,
देखि दीन दूबरो करै न हाय-हाय को |
तुलसी अनाथसो सनाथ रघुनाथ कियो,
दियो फल सीलसिंधु आपने सुभायको ||
नीच यहि बीच पति पायि भरुहायिगो,
बिहायि प्रभु-भजन बचन मन कायको |
तातैं तनु पेषियत घोर बरतोर मिस,
फूटि-फूटि निकसत लोन रामरायको || 41 ||

जियौं जग जानकीजीवनको कहायि जन,
मरिबेको बारानसी बारि सुरसरिको |
तुलसीके दुहूँ हाथ मोदक है ऐसे ठावुँ,
जाके जिये मुये सोच करिहैँ न लरिको |
मोको झूठो साँचो लोग रामको कहत सब,
मेरे मन मान है न हरको न हरिको |
भारी पीर दुसह सरीरतैँ बिहाल होत,
सोवू रघुबीर बिनु सकै दूर करिको || 42 ||

सीतापति साहेब सहाय हनुमान नित,
हित उपदेसको महेस मानो गुरुकै |
मानस बचन काय सरन तिहारे पाँय,
तुम्हरे भरोसे सुर मैँ न जाने सुरकै ||
ब्याधि भूतजनित उपाधि काहू खलकी,
समाधि कीजे तुलसीको जानि जन फुरकै |
कपिनाथ रघुनाथ भोलानाथ भूतनाथ,
रोगसिंधु क्यों न डारियत गाय खुरकै || 43 ||

कहौँ हनुमानसौँ सुजान रामरायसौँ,
कृपानिधान संकरसौँ सावधान सुनिये |
हरष विषाद राग रोष गुन दोषमयी,
बिरची बिरंचि सब देखियत दुनिये |
माया जीव कालके करमके सुभायके,
करैया राम बेद कहैँ साँची मन गुनिये |
तुम्हतैँ कहा न होय हाहा सो बुझैये मोहि,
हौँ हूँ रहौँ मौन ही बयो सो जानि लुनिये || 44 ||

इति शुभं ||